ऐल्डरों की भूमिका

सब इस बात पर सहमत होंगे कि नये नियम की कलीसिया में प्राचीन या ऐल्डर होते थे (प्रेरितों 11:30; 14:23; 15:६6; फिलिप्पियों 1:1; तीतुस 1:5; 1 पतरस 5:1-5)। परन्तु शायद उनके काम की बात पर सभी सहमत नहीं हैं। यदि हम नये नियम को मानते हैं, तो स्थानीय कलीसिया में प्राचीनों या ऐल्डरों का काम या उनकी भूमिका ज़्या है ? पवित्र आत्मा लोगों को प्राचीन अर्थात ऐल्डर बनाता है। प्रेरितों 20:28 कहता है, ''अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुज़्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है।'' वह उन्हें ज़्या काम करने के लिए कहता है और उनसे इसे कैसे करने की उज़्मीद रखता है ?

ऐल्डर ज़्या करते हैं?

आज के युग में हम ऐल्डरों के प्राय: किसी बड़ी कज़्पनी के निर्देशक मण्डल की तरह काम करने पर विचार करते हैं। ज़्या प्रभु ने उनके लिए ऐसा ही चाहा था ?

नये नियम में प्राचीनों या ऐल्डरों को ज़्या काम दिए गए हैं ?

सबसे पहले तो, ऐल्डर विश्वासी रहें। पौलुस ने इफिसुस के ऐल्डरों से कहा था, ''अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुज़्हें अध्यक्ष ठहराया है'' (प्रेरितों 20:28)। उनकी पहली ज़िज़्मेदारी अपने आप को पाप से बाहर और विश्वास में रखना है। यह बात विशेष रूप से तब और भी महत्वपूर्ण हो जाती है जब उन्हें समझ आ जाती है कि 1 पतरस 5:3 के अनुसार, ऐल्डरों का मुज़्य काम नमूना देकर अगुआई करना है।

इब्रानियों 13 अध्याय की दो आयतों पर ध्यान दें। इब्रानियों 13:17 कहता है, ''अपने अगुओं की मानो; और उनके आधीन रहो,'' जबकि आयत 7 कहती है, ''जो तुज़्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुज़्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उनके चाल - चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो।'' इन दो आयतों में एक बड़ा अन्तर यह है कि आयत 7 वाले अगुवे मर चुके थे, जबकि आयत 17 वाले अगुवे अभी भी उनमें थे। यदि ऐसा है, चाहे आंशिक रूप में ही हो, तो इसका अर्थ यह है कि एक अगुवे के रूप में, ऐल्डर का जीवन दूसरों के लिए इतना अच्छा नमूना होना चाहिए कि लोग कह सकें, ''उसे याद रखो ... उसके जैसे काम करो।''

उसके बाद, ऐल्डरों को अगुआई करने की ज़िज़्मेदारी दी गई है। प्राचीन या ऐल्डर के लिए प्रयुज़्त होने वाले सभी शज़्द ''ऐल्डर,'' ''बिशप,'' ''पास्टर या पासबान'' और

''चरवाहा'' सभी अगुआई देने का ही संकेत देते हैं। पुराने नियम के समयों में राजाओं को चरवाहों की तरह माना जाता था। पुराने और नये दोनों ही नियमों में प्रभु को चरवाहा कहा गया है। पुराने नियम के समय में प्राचीनों (ऐल्डरों) को अगुओं के रूप में जाना जाता था, और नये नियम के युग में प्राचीन (ऐल्डर) यूनानी और यहूदी दोनों ही समाजों में अगुवे थे।

कुछ आयतों से पता चलता है कि प्राचीन कलीसिया पर ''शासन'' करते हैं। पहला तीमुथियुस 5:17 कहता है, ''जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेषकर वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दोगुने आदर के योग्य समझे जाएं।'' इब्रानियों 13:7 उनकी बात करता है ''जो तुम्हारे अगुवे थे'' (KJV का अनुवाद ''जो तुम पर शासन करते हैं'')। कलीसिया के सदस्यों के लिए अपने अगुओं (सम्भवत: प्राचीनों) के अधीन होना आवश्यक है: ''अपने अगुवों की मानो; और उनके अधीन रहो'' (इब्रानियों 13:17; तु. 1 पतरस 5:5)।

इन आयतों का क्या महत्व है। मूल रूप में इन आयतों का अर्थ है कि प्राचीनों को कलीसिया की अगुआई करने की ज़िम्मेदारी दी गई है। प्राचीन उन लोगों को जो कम योग्य या अगुआई करने में कम आत्मिक हैं, अनुमति देकर अगुआई करने की अपनी भूमिका को छोड़ नहीं सकते और न ही उन्हें छोड़नी चाहिए; न ही उन्हें कलीसिया को भटकने के लिए अर्थात अगुआई रहित छोड़ना चाहिए।

आवश्यकता नहीं कि इस तथ्य का कि प्राचीनों का काम अगुआई करना है का अर्थ बॉस या सेना के सार्जेंट की तरह शासन करना हो। बेशक ''बिशप'' या ''निगरान'' (*episkopos*) का अर्थ तानाशाही से अगुआई करना माना जा सकता है, परन्तु आवश्यक नहीं कि इसका अर्थ यही हो। इस शब्द के क्रिया रूप का अर्थ है ''सम्भालना।''

तीसरी बात, प्राचीनों का काम झूठे शिक्षकों से झुंड की सुरक्षा करना होता है। पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को अपनी और अपने झुंड की चौकसी करने के लिए कहने के बाद, चेतावनी दी कि ''फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे – ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे'' (प्रेरितों 20:29, 30)। साफ़ है कि ऐसे भेड़ियों से झुंड को बचाने की ज़िम्मेदारी प्राचीनों की ही थी। तीतुस 1:9-11 में पौलुस ने कहा एक ऐल्डर के लिए आवश्यक है कि वह ''विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे; कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके, और विवादियों का मुंह भी बन्द कर सके। क्योंकि बहुत से लोग निरंकुश, बकवादी और धोखा देने वाले हैं; विशेष करके खतना वालों में से। इनका मुंह बंद करना चाहिए।'' शायद झूठे शिक्षकों से कलीसिया की सुरक्षा करना प्राचीनों का सबसे महत्वपूर्ण काम था।

बहुत से मामलों में प्राचीन अपना नमूना देकर, समझाकर, और प्रेरणा देकर अगुआई करते हैं। परन्तु झूठे शिक्षकों के सम्बन्ध में प्राचीनों की ज़िम्मेदारी बहुत स्पष्ट है। यदि झूठे शिक्षक झुंड की अगुआई कर रहे हैं जिसके कारण भेड़ों का सदा के लिए नाश होता है, तो सच्चाई के लिए खड़े होने और उन झूठे शिक्षकों से झुंड को बचाने के लिए प्राचीनों को हर उचित और नैतिक ढंग अपनाना आवश्यक है।

चौथा, प्राचीनों के लिए झुंड के चरवाहों के रूप में काम करना आवश्यक है। इफिसियों 4:11 में उन्हें ''रखवाले'' या ''चरवाहे'' कहा गया है। प्रेरितों 20:28 में उन्हें ''परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली'' और 1 पतरस 5:2 में ''परमेश्वर के झुंड की रखवाली [या पासबानी]'' करने के लिए कहा गया है।

''रखवाली'' करने के लिए ज़्या-ज़्या करना पड़ता है। इसके लिए झूठे शिक्षकों से झुंड की रक्षा करना आवश्यक है, परन्तु उन्हें चराना (सिखाना) या यह देखना कि उन्होंने खा लिया है (या वे सीख गए हैं) या उन्हें और भोजन चाहिए।

''झुंड की रखवाली'' करने का अर्थ समझने के लिए, हमें प्राचीन समय के चरवाहों का चित्र बनाना होगा। आज कई जगहों पर लोग भेड़ों को मोटरसाइकिलों पर या कुज़ों के द्वारा चराते हैं! अच्छे चरवाहे और अपनी भेड़ों के साथ उसके सज़्बन्ध के लिए, लूका 15:3-7 पर विचार करें: जिसमें चरवाहा अपनी जान को जोखिम में डाल कर भी खोई हुई भेड़ को ढूंढ़ने के लिए निकल गया। यूहन्ना 10:1-17 पर विचार करें: अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर पुकारता है ... वह उनकी अगुआई करता है ... वह उनके लिए अपना प्राण देता है ... वह उन्हें जानता है। भजन संहिता 23 पद पर ध्यान दें: चरवाहे के कारण ही, भेड़ें कह सकती हैं, ''मुझे कुछ घटी न हो।'' भेड़ों को कुछ घटी नहीं होती ज़्योंकि चरवाहा उनके लिए सब कुछ उपलज़्ध करवाता है।

इसकी तुलना यहेजकेल 34:2-6 में वर्णित इस्राएल के दुष्ट चरवाहों (राजाओं, राजकुमारों व झूठे भविष्यवज़्ताओं) से करें:

> ''... इस्राएल के चरवाहों के विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके उन चरवाहों से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हाय इस्राएल के चरवाहों पर, जो अपने अपने पेट भरते हैं! ज़्या चरवाहों को भेड़ - बकरियों का पेट न भरना चाहिए? तुम लोग चर्बी खाते, ऊन पहिनते और मोटे मोटे पशुओं को काटते हो; परन्तु भेड़ - बकरियों को तुम नहीं चराते। तुम ने बीमारों को बलवान न किया, न रोगियों को चंगा किया, न घायलों के घावों को बांधा, न निकाली हुई को फेर लाए, न खोई हुई को खोजा, परन्तु तुम ने बल और जबरदस्ती से अधिकार चलाया है। वे चरवाहे के न होने के कारण तितर - बितर हुईं; और सब वनपशुओं का आहार हो गईं। मेरी भेड़ - बकरियां तितर बितर हुई हैं; वे सारे पहाड़ों और ऊंचे ऊंचे टीलों पर भटकती थीं; मेरी भेड़ - बकरियां सारी पृथ्वी पर तितर बितर हुईं; और न तो कोई उनकी सुधि लेता था, न कोई उनको ढूंढ़ता था।''

पांचवां, प्राचीनों का काम झुंड में आत्माओं की निगरानी करना होता है। इब्रानियों 13:17 कहता है, ''अपने अगुवों की मानो; और उनके आधीन रहो, ज़्योंकि वे उनकी नाईं तुज़्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, ज़्योंकि इस दशा में तुज़्हें कुछ लाभ नहीं।'' यहां पर ''प्राचीन'' के लिए किसी प्रचलित यूनानी शज़्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है। परन्तु इस

तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि किसी को भी स्थानीय कलीसिया के अगुवे के रूप में अकेला नहीं रखा गया, यह साफ लगता है कि ''अगुओं'' शज़्द के द्वारा ''प्राचीनों'' की ओर संकेत किया गया है। इस आयत में ''अगुओं'' या ''प्राचीनों'' का काम लोगों की आत्माओं की निगरानी करना है, जो एक ऐसी ज़िज़्मेदारी है जिसका एक दिन उनसे हिसाब मांगा जाएगा।

इस आज्ञा में एक बहुत बड़ी ज़िज़्मेदारी का पता चलता है। एक प्रचारक का कहना था कि जब कोई प्राचीन किसी पूर्व सदस्य की कब्र के पास से गुज़रे, तो उसे अपने आप से पूछना चाहिए, ''ज़्या यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह भाई (या बहन) स्वर्ग में जाए मैंने अपनी पूरी कोशिश की थी?'' इसके अलावा, इस आज्ञा में विशेष ज़िज़्मेदारी भी है। यद्यपि प्राचीन दूसरे लोगों को मसीह में लाने का काम कर सकते हैं और उन्हें करना भी चाहिए, तो भी उनकी सबसे पहली ज़िज़्मेदारी उनकी अगुआई करना है जो पहले से ही संगति में हैं। इससे पता चलता है कि उनके मुज़्य प्रयास ज़्या होने चाहिए।

छठा, सुसमाचार प्रचारकों तथा उपदेशकों के साथ - साथ, प्राचीनों को भी प्रत्येक सदस्य की सेवा करने के योग्य होना चाहिए, जिससे कलीसिया उन्नति कर सके। इफिसियों 4:11, 12 में यही संदेश है, ''और उस ने कितनों को प्रेरित नियुज़्त करके, और कितनों को भविष्यवज़्ता नियुज़्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुज़्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुज़्त करके दे दिया। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए।'' इसलिए एक प्राचीन या ऐल्डर (या सुसमाचार सुनाने वाले या उपदेशक) का काम सेवा करना उतना नहीं जितना सेवा के लिए सदस्यों की अगुआई करना और विशेष रूप से यह देखना है कि उसने दूसरों को सेवा के लिए तैयार होने में सहायता की है या नहीं।

मण्डली को प्राचीनों की अगुआई में कैसे चलना चाहिए?

कलीसिया को मज़बूत नेतृत्व की बात प्रसन्नतापूर्वक माननी चाहिए। प्राचीनों को निर्देश देने के बाद, पतरस ने लिखा, ''हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के आधीन रहो'' (1 पतरस 5:5)। ज़्योंकि वह कलीसिया में ''अधिकार वालों'' को सज़्बोधित कर रहा था, इसलिए सज़्भव है कि नवयुवकों से बात करते हुए वह मण्डली के प्रत्येक व्यज़्ति से कह रहा था। इब्रानियों 13:17 में मसीही लोगों से कहा गया है, ''अपने अगुओं की मानो; और उनके आधीन रहो।''

सदस्यों को प्राचीनों की बात खुशी से ज़्यों माननी चाहिए? पहली बात, ये लोग इस भूमिका के लिए विशेष रूप से योग्य हैं (1 तीमुथियुस 3; तीतुस 1)। इन योग्यताओं को पूरा करने वाले लोगों की बात मानना आवश्यक है। दूसरा, प्राचीनों को ''अधिकार'' देने का स्वर सारी मण्डली का था। प्राचीनों को नियुज़्त किए जाने के समय मण्डली आम तौर पर उन्हें अपने अगुओं के रूप में स्वीकार करने के लिए एक स्वर होती है (जैसे वीटो अर्थात यह कहने का अधिकार कि कुछ लोग इस योग्य नहीं हैं)। तीसरा, पवित्र आत्मा ने उन्हें अध्यक्ष ठहराया (प्रेरितों 20:28)। लोगों को पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिए गए वचन में

मिलने वाले निर्देशों के अनुसार ही प्राचीन होने के लिए चुना जाता है, अर्थात उन्हें उस कार्य को करने के लिए परमेश्वर की ओर से ठहराया गया है।

मण्डली को अगुओं का आदर करना चाहिए। पौलुस ने लिखा, ''जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दोगुने आदर के योग्य समझे जाएं'' (1 तीमुथियुस 5:17)। संदर्भ इस बात को स्पष्ट करता है कि ''दोगुने आदर'' में उनके काम के लिए वेतन देने का संकेत है। यदि वेतन ''दूसरा आदर'' है तो पहला उनके काम के महत्व तथा उनके चरित्र के कारण, सज़्मान ही होना चाहिए जिसका कोई मोल नहीं है।

मसीही लोगों को पिच्छलग्गू होने से बचना चाहिए। आम तौर पर हम कलीसिया में पाई जाने वाली बुराई के लिए अगुओं को ही दोषी मानते हैं। यह भी हो सकता है कि जिसे हम बुरी लीडरशिप कहते हैं कई मामलों में वास्तव में वहां बुरे ''शिष्य'' हों अर्थात ऐल्डर तो अपना योगदान दे रहे हैं, परन्तु सदस्य बिना किसी तर्कसंगत कारण के उनकी बात मानने से इन्कार कर रहे हों!

प्राचीनों को कैसे अगुआई करनी चाहिए?

यह कहने से कि ऐल्डरों को कलीसिया की अगुआई करनी चाहिए और कलीसिया को अपने अगुओं की माननी चाहिए आज कलीसिया की समस्याओं का समाधान नहीं होता। प्राचीनों को अगुआई *कैसे* करनी चाहिए?

ज़्या उन्हें राजाओं या तानाशाहों की तरह अगुआई करनी चाहिए? ज़्या उन्हें सेनापतियों या अधिकारियों की तरह अगुआई करनी चाहिए? ज़्या उन्हें कोचों या शिक्षकों की तरह अगुआई करनी चाहिए? ज़्या उन्हें माता - पिता की तरह अगुआई करनी चाहिए? ज़्या अगुआई करने का कोई और ढंग नहीं है जिससे उनकी अगुआई की तुलना की जा सके?

यदि प्राचीनों ने अगुआई करने का विचार केवल बाइबल से ही लिया है, तो सज़्भवत: अगुआई करने के ''ढंग'' पर बहुत कम असहमति होगी। समस्या यह है कि ऐल्डर नियुज़्त होने वाले लोग उस काम में अपने अनुभवों से ही अगुआई करने के काम को देखते हैं। उन्होंने व्यापार, सशस्त्र सेनाओं, खेलों या अपने परिवारों की अगुआई करने वालों या दूसरों की आज्ञा मानने वालों के रूप में काम किया होता है। उन्हें लगता है कि नेतृत्व के ढंग जो इन अनुभवों में उपयुज़्त माने जाते हैं कलीसिया में भी इस्तेमाल किए जाने चाहिए।

पश्चिमी देशों में कलीसिया की विशेषता को आम तौर पर अपनी अगुआई के लिए ''बिजनेस के ढंग'' अपनाए जाते हैं। प्राचीन या ऐल्डर किस कज़्पनी के ''निर्देशक मण्डल'' की तरह इकट्ठे होते हैं, ''मुज़्य कार्यकारी अधिकारी'' होने के लिए किसी प्रचारक को बुलाते हैं, और ''लाभ हानि'' के बारे में चर्चा होती है, जो स्पष्टतया संज़्या, धन और इमारतों के बारे में होती है। वे अपने काम को ''कज़्पनी'' के लिए निर्णय लेने के रूप में देखते हैं। वे नीतियां बनाकर उन्हें प्रकाशित करते हैं। इसके अतिरिज़्त, यदि उनके ''कर्मचारी'' ऐसा करने में नाकाम रहते हैं तो वे उन्हें दण्ड देते हैं।

ज़्या यह बाइबल के अनुसार है ? ज़्या अगुआई करने के इस ''ढंग'' के बारे में नया नियम कुछ कहता है ? इस प्रश्न का उज़र देने वाली एक आयत को देखने से पहले, हमें गलत विचारों को स्पष्ट कर देना चाहिए और उस बात को फिर से लागू करना चाहिए जिसे इस प्रश्न पर इस पुस्तक में पहले कहा गया है।

हमें चाहिए कि गलत मान्यता को मानने और गलत निर्णय लेने से बचें। कई लोग उस विश्वव्यापी कलीसिया के आधार पर जिसकी तस्वीर हमने देखी, तानाशाही अधिकार में विश्वास रखते हैं। जब कलीसिया को एक परिवार के साथ मिलाया जाता है, तो परिवार में प्राचीनों को पिता की भूमिका की तरह ही स्थानीय कलीसिया में अधिकार दिया जाता है, इसलिए उन्हें स्थानीय कलीसिया पर अपनी इच्छा लागू करने का अधिकार है। वैकल्पिक तौर पर हम कह सकते हैं कि कलीसिया एक राज्य है, इसलिए मसीह ने स्थानीय कलीसियाओं पर प्राचीन नियुज़्त किए हैं और उन्हें अपनी इच्छा को लागू करने के लिए अपने अधिकार से प्रतिनिधि बनाया है।

इस तर्क के साथ समस्या यह है कि हमें विश्वव्यापी कलीसिया के बारे में शिक्षा लेकर उनका यह अर्थ नहीं निकालना चाहिए जैसे कि वह स्थानीय कलीसिया के सज़्बन्ध में हो जो कि होना चाहिए। ऊपर दिए गए तर्क को स्वीकार करने का अर्थ रोमन कैथोलिक चर्च और इसके विश्वव्यापी कलीसिया के संगठन के दृष्टिकोण को मानना है।

इस पाठ में कही गई अधिकतर बातों में लीडरशिप के ''कैसे'' से जुड़े अर्थ मिलते हैं। पहला, यह तथ्य कि लीडरशिप एक दान है सुझाव देता है कि प्राचीनों को दूसरों से ऊंचा नहीं होना चाहिए। दूसरा, कलीसिया के अगुओं को ''प्राचीन'' कहना सुझाव देता है कि उन्हें नमूने देकर तथा सिखाने के द्वारा समझदारी से अगुआई करनी चाहिए। तीसरा, प्राचीनों को बिशप, या अध्यक्ष कहना उन लोगों के प्रति परोपकार है जिनकी अध्यक्षता वे करते हैं। चौथा, यह तथ्य कि प्राचीनों को पास्टर, या चरवाहे कहा जाता है, सुझाव देता है कि उन्हें झुंड को हांकना नहीं, बल्कि उसकी अगुआई करनी चाहिए। उनके लिए भेड़ों को जानना और भेड़ों द्वारा उन्हें जानना आवश्यक है अर्थात उन्हें भेड़ों के पास रहना चाहिए। उनका काम भेड़ों की भलाई करना ही है और उन्हें वही करना चाहिए जो भेड़ों के लिए सबसे अच्छा है (केवल अपने लिए ही नहीं) और भेड़ों से इतना प्रेम करना चाहिए कि उनके लिए प्राण भी दे सकें! चौथा, कलीसिया के लोगों के प्राणों की निगरानी करने का काम, जिन्हें उसके लिए हिसाब देना पड़ेगा, सुझाव देता है कि उनकी लीडरशिप का काम मुज़्यतया इमारतें, कार्यक्रम और आंकड़े नहीं, बल्कि लोगों को बनाना है!

1 पतरस 5:1-6 में प्राचीनों की लीडरशिप को ''कैसे'' दिखाया गया है:

> तुम में जो प्राचीन हैं मैं उनकी नाईं प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रकट होने वाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं। कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुज़्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच - कमाई के लिए नहीं, पर मन लगाकर। और जो लोग तुज़्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ,

बरन झुंड के लिए आदर्श बनो। और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुझ़्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं। हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के आधीन रहो, बरन तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बान्धे रहो, ज़्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का साज़्हना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।

इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुझ़्हें उचित समय पर बढ़ाए।

प्राचीनों द्वारा अगुआई करने के ढंग के प्रश्न पर विचार करते हुए, पतरस ने सबसे पहले स्पष्ट किया कि, प्रेरित (इसलिए एक प्रचारक) एक प्राचीन बन सकता है (आयत 1)। दूसरा, उसने स्पष्ट किया कि प्राचीनों को विशेष कार्य अर्थात अपने अधीन झुंड को चराने का काम दिया गया था (आयत 2)। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि, बेशक यह झुंड उनके अधीन है, पर यह झुंड ''उनका'' नहीं है। मसीह ''प्रधान रखवाला'' है (1 पतरस 5:4) ज़्योंकि यह उसी का झुंड है। प्राचीन उस झुंड के केवल भण्डारी हैं जिस पर उन्हें परमेश्वर ने नियुज़्त किया है। तीसरा, पतरस ने कहा कि प्राचीनों को बताया गया है कि वे अपना काम कैसे पूरा करें (आयत 2, 3)। इस आयत में तीन जुड़वां वाज़्यांश, जिनमें प्रत्येक में एक नकारात्मक और एक सकारात्मक है, वर्णन करते हैं कि प्राचीनों को अगुआई कैसे करनी चाहिए अर्थात उन्हें दबाव से नहीं बल्कि स्वेच्छा से; नीच कमाई के लिए नहीं, पर मन लगाकर; और लोगों पर हुकम चलाकर नहीं, बल्कि झुंड के सामने नमूना पेश करके करनी चाहिए। चौथा, यदि प्राचीन अपने काम को अच्छी तरह करते हैं तो इसके लिए उन्हें पुरस्कार मिलेगा (आयत 4)। पांचवां, नवयुवक मसीहियों को प्राचीनों के अधीन रहना चाहिए (आयत 5)। छठा, हर एक को एक दूसरे के सामने दीन होना चाहिए (आयत 5)! सातवां, हर किसी को परमेश्वर के सामने दीन होना चाहिए (आयत 6)।

प्राचीनों के लिए अपने अधीन लोगों पर ''अधिकार न जताओ'' का ज़्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि वे तानाशाहों, स्वामियों व पुलिस अधिकारियों की तरह उनकी अगुआई न करें। न ही उन्हें कोचों या माता - पिता की तरह अगुआई करनी चाहिए, जिनके पास कुछ सीमा तक अपने अधीन लोगों पर पूर्ण अधिकार होता है।

प्राचीन तानाशाह नहीं होते! बेशक 1 पतरस 5:5 कहता है कि नवयुवकों को अपने प्राचीनों के अधीन रहना चाहिए, परन्तु आयत 6 यह कहने के लिए आगे बढ़ती है कि हर एक को दूसरे चेले के सामने दीन होना चाहिए! अन्य शज़्दों में एक अर्थ में, प्राचीनों को चाहिए कि वे नवयुवकों के प्रति विनम्र हों।

प्राचीन अगुआई का काम कैसे कर सकते हैं? सबसे पहले तो वे *नमूना पेश करके* अगुआई करते हैं (1 पतरस 5:3)। वे वही बनने और करने की कोशिश करते हैं जो वे दूसरों को बनाना और उनसे करवाना चाहते हैं।

फिर वे *सिखाकर* और यह देखकर कि सही शिक्षा दी जा रही है उनकी अगुआई करते हैं (प्रेरितों 20:28; 1 तीमुथियुस 3:2; 5:17; तीतुस 1:9-16)। शिक्षा में लोगों को बदलने

की सामर्थ है। ऐल्डर शिक्षा से लोगों में अपेक्षित परिवर्तन चाहते हैं।

तीसरा, वे *समझाकर और प्रेरणा देकर* उनकी अगुआई करते हैं। नये नियम की कलीसिया में यदि किसी के पास अधिकार था, तो वे प्रेरित ही थे। पौलुस के पास किसी भी अन्य प्रेरित की तरह पूरा अधिकार था, फिर भी ध्यान दें कि पौलुस ने कैसे अगुआई की, जिसका उसकी पत्रियों में स्पष्ट पता चलता है। पौलुस मण्डलियों को इस तरह से सिखाना और समझाना चाहता था जो कि भलाई करने के लिए उसके प्रभाव में थीं। ऐसे ही, प्राचीन भी भलाई करने के अपने काम में लोगों को समझाने का प्रयास करके और शिक्षा से उनकी अगुआई करते हैं।

प्राचीनों की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी निर्णय लेना नहीं है। फिर भी उन्हें कलीसिया के लिए निर्णय लेने के लिए बुलाया गया है। बुनियादी तौर पर वे दो क्षेत्रों में निर्णय लेते हैं।

कुछ निर्णय विश्वास के दायरे में होते हैं। उदाहरण के लिए प्राचीनों को यह निर्णय लेना होता है कि सच्चाई की शिक्षा दी जा रही है, कि बाहर के किसी प्रचारक को जो सच्चाई का प्रचार नहीं करता बुलाया जाए या नहीं, या उस मण्डली के साथ काम कर रहे प्रचारक को जो सच्चाई का प्रचार नहीं करता ''निकाल दिया'' जाए। एक अर्थ में, वे सच्चाई की किसी बात के सम्बन्ध में निर्णय नहीं लेते क्योंकि यह सब तो उनके लिए पहले से ही बाइबल में बता दिया गया है। उनका काम यह सुनिश्चित करना है कि विश्वास या अनिवार्य विषय में केवल सच्चाई का ही प्रचार किया जाए।

अन्य निर्णय विचार से जुड़े दायरे में लिए जाते हैं। उदाहरण के लिए प्राचीनों को निर्णय लेना पड़ सकता है कि गाड़ियां खड़ी करने की जगह होनी चाहिए। आ जाकर, उनके अधिकतर निर्णय विचार से जुड़े मामलों से सम्बन्धित होते हैं।

विचार के दायरे में प्राचीनों के निर्णय के बाद, उनका अगला काम सदस्यों को सिखाना और उस निर्णय को स्वीकार करके उसे व्यवहार में लाना होता है। यदि प्राचीन अधिकतर सदस्यों से वह निर्णय न मनवा सकें, जो उन्होंने विचार के क्षेत्र में लिया है, तो उन्हें चाहिए कि वे कुछ समय के लिए उस योजना को बन्द कर दें या अपने निर्णय पर फिर से विचार करें। यदि चरवाहे विचार से जुड़ी बातों में भेड़ों को अपने पीछे नहीं लगा सकते, तो उनके लिए इस मार्ग पर बने रहने का कोई लाभ नहीं होगा और निराशा ही मिलेगी।

सारांश

यदि प्राचीन परमेश्वर द्वारा दिए गए काम को समझदारी से *परमेश्वर के ढंग से* पूरा कर लेते हैं, और यदि सदस्य उनकी बात को नये नियम की बात के रूप में मान लेते हैं, तो कभी कोई गंभीर समस्या नहीं आएगी।